खण्ड-12, अंक-1, वर्ष-2024, मु0प्र0 159-162
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v12i1.26
SJIF (2024) : 8.287

Kalinjar forte, District-Banda: An Archeological and Geoheritage Site

Hemant Kumar, Subhash, Utkarsh Tripathi and Vimal Prakash Gaud
Geological Survey of India, Northern Region, Lucknow- 226 024, U.P., India
hemant.kumar@gsi.gov.in

Received: 28-10-2024, Accepted: 05-12-2024

Abstract- The famous fort of Kalinjar (Kalanjar) is an ancient impregnable hill fort located in the Bundelkhand region. The base of this hill, made of Bundelkhand granite from the Archean age, shows a geological disconformity representing the transition between the Proterozoic Vindhyan supergroup's sedimentary sandstone. In addition to this distinct geological feature, the fort is also a historical heritage that incorporates architectural styles from the Gupta, Pratihara, Panchayatan Nagar, and ultimately Mughal periods. As citizens of a prosperous nation, it is our duty to preserve and promote this archaeological monument and geological heritage for future generations.

Key Words: Geoheritage, Kalinjar, Vindhyan, Proterozoic, Bundelkhand granite

कालिंजर किला, बांदा जिला, उत्तर प्रदेशः एक पुरातात्विक भू–विरासत स्थल

हेमंत कुमार, सुभाष कुमार, उत्कर्ष त्रिपाठी एवं विमल प्रकाश गौड़
भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, उत्तरी क्षेत्र, लखनऊ–226 024, उ0प्र0, भारत
hemant.kumar@gsi.gov.in

सार– कालिंजर (कलंजर) का प्रसिद्ध किला, बुन्देलखंड क्षेत्र में स्थित एक प्राचीन अजेय पहाड़ी किला है। इस पहाड़ी का आधार आर्कियन आयु का बुंदेलखंड ग्रेनाइट से होते हुए प्रोटेरोज़ोइक युग का विंध्य महासमूह का तलछटी बलुआ पत्थर के बीच के संक्रमण को दर्शाने वाली असंगति को इंगित करता है। इस विशेष इपार्चियन असंगति के रूप में भूवैज्ञानिक विशेषता के अतिरिक्त यह किला एक ऐतिहासिक धरोहर भी है जो कि अपने अंदर गुप्त शैली, प्रतिहार शैली, पंचायतन नगर शैली एवं अंततः मुगलकालीन वास्तुकला की शैलियाँ समाहित किए है। एक समृद्ध देश के नागरिक के रूप में यह हमारा दायित्व है कि हम अपनी भावी पीढ़ियों के लिए इस पुरातात्विक स्मारकों एवं भूवैज्ञानिक धरोहर को संरक्षित एवं प्रसारित करें।

बीज शब्द– भू–विरासत, कालिंजर, विंध्यन, प्रोटेरोज़ोइक, बुंदेलखण्ड ग्रेनाइट

1. **परिचय**– विंध्य तलछटी बेसिन आंशिक रूप से मध्य भारत में लगभग 2500 मिलियन वर्ष पुराने बुन्देलखंड क्रेटन के चारों ओर फैला हुआ है। कालिंजर (कलंजर) पहाड़ी उन क्षेत्रों में से एक है, जो पृथ्वी के इतिहास में आर्कियन और प्रोटेरोज़ोइक युगों के बीच के संक्रमण को दर्शाने वाली विशेष इपार्चियन असंगति को दर्शाता है। इसी पहाड़ी पर स्थित कालिंजर (कलंजर) का प्रसिद्ध किला (**चित्र–1**) बुन्देलखंड क्षेत्र में मध्य प्रदेश की सीमा पर उत्तर प्रदेश के बांदा जिले की नरैनी तहसील के अंतर्गत ताराहाटी गांव में अवस्थित है। यह कैमूर बलुआ पत्थर से बनी एक अलग सपाट चोटी वाली विंध्य पहाड़ी पर खड़ा है, जो मैदान से 244 मीटर ऊपर है। यह चंदेला किला पूर्व–पश्चिम दिशा में संरेखित है, जिसकी लंबाई लगभग 2 किमी और चौड़ाई 800 मीटर है। यह 25–30 मीटर चौड़ी मजबूत नींव पर बनाया गया है और 8 मीटर चौड़े शिखर के साथ इसकी ऊंचाई लगभग 30–25 मीटर है। इसके निर्माण में प्रयुक्त सामग्री मुख्य रूप से आस–पास के इलाकों से प्राप्त बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट के टुकड़े से मिलाकर बनी हैं।[1–6]

2. **प्रमुख आकर्षण**– यह किला मध्यकालीन भारत के सबसे बड़े और अपराजेय किलों में से एक है, इस किले में वास्तुकला की कई शैलियाँ सम्मिलित हैं। गुप्त शैली, प्रतिहार शैली, पंचायतननगर शैली आदि। कहा जाता है कि कलंजराद्रि या कलिंजरा की पहाड़ी का नाम

स्वयं शिव से लिया गया है, जो काल या "समय" के रूप में सभी चीजों का क्षय करते हैं, और इसलिए सभी चीजों का विनाशक और मृत्यु का देवता है। कालिंजर के किले में दो प्रवेश द्वार हैं, जिनमें से मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है और दूसरा आग्नेय कोण पर है जो पन्ना की ओर जाता है। दूसरा प्रवेश द्वार सात अलग–अलग द्वारों द्वारा संरक्षित है, जिनके नाम क्रमशः (1) आलम या आलमगिरि द्वार (**चित्र–2**) (2) गणेश द्वार (3) चंडी या चौ–बुर्जी द्वार (4) बुध–भाद्र द्वार (5) हनुमान द्वार (6) लाल दरवाजा एवं (7) बड़ा दरवाजा है। सात द्वारों की संख्या के आधार पर कालिंजर को "सौर पूजा का स्थान" अथवा "रविचित्रा" के नाम से भी जाना जाता है।

चित्र–1: उत्तर प्रदेश के बांदा जिले की नरैनी तहसील के अंतर्गत ताराहाटी गांव स्थित कलिंजर किला

चित्र–2: कालिंजर किले का मुख्य द्वार

कालिंजर के मुख्य आकर्षणों में से एक नीलकंठ मंदिर (**चित्र–3**) है। इसका निर्माण चंदेल शासक परमादित्य देव ने करवाया था। मंदिर में 18 भुजाओं वाली विशाल प्रतिमा के अलावा शिवलिंग नीले पत्थर का है। यहाँ कालभैरव की एक विशाल आकृति है (**चित्र–4**), जिसमें 18 भुजाएं हैं, जिनमें खोपड़ी की सामान्य माला, सांप की बालियां, सांप के बाजूबंद और गले में एक सांप बंधा हुआ है। पवित्र मूर्तिकला के कई टूटे हुए टुकड़े सांस्कृतिक समृद्धि और विविधता के बारे में बताते हैं क्योंकि अधिकांश सदियों पुराने हैं। स्थापत्य प्राचीनता के अलावा, किले परिसर के भीतर कई पौराणिक स्थान और मूर्तियां हैं। छोटी गुफाओं में से एक, जिसे सीतासेज (**चित्र–5**) में एक पत्थर का बिस्तर और तकिया है। पातालगंगा एक बड़ा गहरा कुआँ या जलाशय है, जो चट्टान में खुदा हुआ है। जबकि पांडु–कुंड (**चित्र–6**) एक उथला गोलाकार तालाब है, जिसका व्यास लगभग 12 फीट है, जिसमें दरारों से लगातार पानी टपक कर एकत्रित होता रहता है।

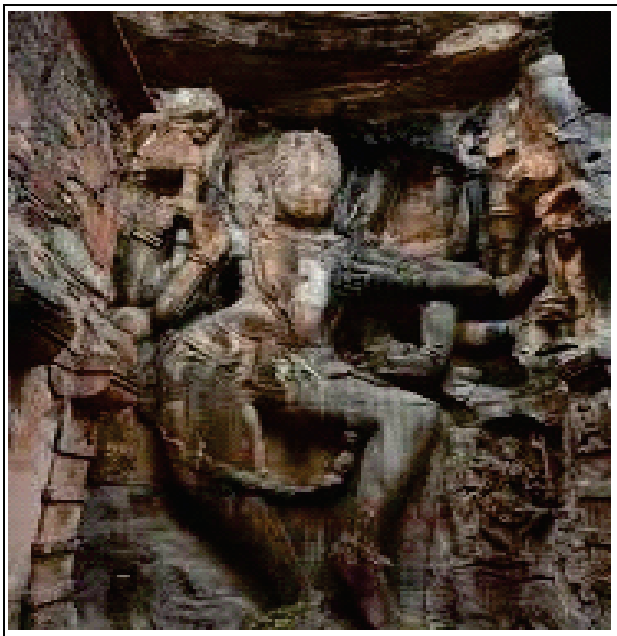

चित्र–4: कालिंजर किले में स्थित कालभैरव की आकृति

चित्र–3: कालिंजर किले में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर

चित्र–5: कालिंजर किले में स्थित सीता सेज

चित्र–6:कालिंजर किले में स्थित पाताल गंगा

चित्र–7: प्रोटेरोज़ोइक कैमूर बलुआ पत्थर (1200 मिलियन वर्ष) और बुन्देलखंड ग्रेनाइट (2000 मिलियन वर्ष से अधिक) के बीच का अंतराल

3. **भूवैज्ञानिक आकर्षण**– भूगर्भिक दृष्टि से, विंध्य तलछटी बेसिन लंबे समय से जमा अविकृत तलछट के सबसे बड़े भंडारों में से एक है। किले के मुख्य प्रवेश द्वार से लगभग 800 मीटर पहले, भूवैज्ञानिक सीमा 1400 मिलियन वर्ष पुरानी विंध्यन सुपरग्रुप की तलछटी चट्टानों और 2000 मिलियन वर्ष से अधिक पुराने ग्रेनाइटों से युक्त आर्कियन चट्टानों के बीच है। यह सीमा एक ऐसे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है जिसने पृथ्वी के टेक्टोनिक्स और जलवायु प्रणालियों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा। यह क्षरण और गैर–जमाव की अवधि की विशेषता है

जिसके कारण गैर–अनुरूपता का निर्माण हुआ, जहाँ पुरानी आर्कियन चट्टानें पुराण बेसिन में से एक में जमा अपेक्षाकृत युवा प्रोटेरोज़ोइक चट्टानों से ढकी हुई हैं। यह असंगति लगभग 600 से 800 मिलियन वर्ष के भूवैज्ञानिक एवं उल्लेखनीय अंतराल की अवधि (**चित्र–7**) को दर्शाती है जो कि प्रोटेरोज़ोइक कैमूर बलुआ पत्थर (1200 मिलियन वर्ष) और बुन्देलखंड ग्रेनाइट (2000 मिलियन वर्ष से अधिक) से अलग करती है और इस वृहद समय अंतराल का प्रतिनिधित्व करती है।

4. **निष्कर्ष**– कालिंजर किले तक के पहुंच मार्ग पर इस किले के इतिहास और वास्तुकला को देखने से पहले, भूवैज्ञानिक दृश्टि से लगभग 600 से 800 मिलियन वर्ष के वृहद समय अंतराल को दर्शाता यह स्थान, इस ऐतिहासिक स्थल के आगंतुकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण का केंद्र हो सकता है। साथ ही यह स्थान भूवैज्ञानिकों, शोध छात्रों एवं अन्य छात्र छात्राओं को भूविज्ञान की ओर आकर्षित करने का अवसर प्रदान करता है। सड़क का विस्तारीकरण, रखरखाव, वनस्पति विस्तार और कभी–कभार आने वाले आगंतुकों की गैर–जिम्मेदारी जैसे चट्टान विकृति चित्र, कूड़ा–करकट इत्यादि, इस भू–विरासत स्थल के लिए संभावित खतरे हैं। चूंकि किले का संरक्षण और रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.) द्वारा किया जाता है, इसलिए इस भू–विरासत स्थल के भूवैज्ञानिक महत्व को व्यक्त करने वाली एक उपयुक्त रूप से डिजाइन की गई संरक्षण योजना के साथ इस स्थान को एक पुरातात्विक एवं भूधरोहर को साझा रूप में विकसित करने की आवश्यकता है।

अभिस्वीकृति– सभी लेखक श्री असित साहा, महानिदेशक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के प्रति उनकी प्रेरणा के लिए अपना आभार व्यक्त करते हैं। साथ ही, डा० जोयेश बागची, अपर महानिदेशक, केन्द्रीय मुख्यालय एवं श्री राजिंदर कुमार अपर महानिदेशक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, उ0क्षे0, लखनऊ, को, उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग एवं कार्य को प्रकाशित करने के लिए निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते है।

References

1. Edwin, T.; Atkinson, Statistical Descriptive and historical Account of the North-Western provinces of India, vol. 1, Allahabad, pp. 446-73.
2. A. Fuhrer (1969) The Monumental Antiquities and inscriptions in the North-Western Provinces and oude, Varanasi, reprint, 1969, pp.149-54.
3. Auden, J. B. (1933) Vindhyan sedimentation in Son Valley, Mirzapur District; Geol. Surv. India Memoir, vol. 62, pp. 141–250.
4. Bose, P. K.; Sarkar, S.; Das, N. G.; Banerjee, S.; Mandal, A. and Chakraborty, N. (2015) Proterozoic Vindhyan Basin: Configuration and evolution; In: Precambrian basins of India: Stratigraphic and tectonic context (eds) Mazumder R and Eriksson P G, Geol. Soc. London Memoir, vol. 43, no. 1, pp. 85–102.
5. Kumar, S. and Sharma, M. (2011) Vindhyan Basin, Son Valley Area, central India; The Palaeol. Soc. of India, Field Guide, 121p.
6. Roy, A. and Purohit, R. (2017) Bundelkhand Protocontinent, Indian Shield, pp. 149-174. https://doi.org/10.1016/B978-0-12-809839-4.00008-4